Page No.
DATE / /

D.El.Ed. IInd Sem

Subject :- S.St

Topic :- प्रति-चक्रवात में मौसम की दशाओं का विवरण

प्रति-चक्रवातों का व्यास बहुत विस्तृत क्षेत्र पर होता है। इनके भीतर जलवायु सम्बन्धी परिवर्तन भी बहुत मन्द गति से होते हैं। प्रति-चक्रवात में पवन संचार भी बहुत कम होता है। प्रति-चक्रवातों की उत्पत्ति शान्त-प्रधान क्षेत्रों में धरातल के शीघ्र ठण्डा होने के कारण होती है। परन्तु इनका प्रभाव क्षेत्र गुरुत्व कटिबन्धीय उच्चदाब के क्षेत्र होते हैं।

प्रति-चक्रवातों में प्रायः स्वच्छ, शुष्क सुहावना एवं शान्त मौसम पाया जाता है। इनमें वर्षा नहीं होती है। प्रति चक्रवातों में शीत लहरें उत्पन्न होती हैं। तथा शुष्क ठण्डी पवनें चलने लगती हैं अथवा कोहरा उत्पन्न हो जाता है। शीत-प्रधान क्षेत्रों में इनसे हिमपात हो जाता है। प्रति-चक्रवातों में वर्षा का प्रायः अभाव पाया जाता है, केवल कहीं-कहीं हल्की वर्षा हो जाती है। प्रति-चक्रवातों के कारण कभी-कभी एक ही स्थान पर कई-कई दिन तक बादल छाए रहते हैं।

Scanned with CamScanner